SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय अर्थव्यवस्था को खोखला करता, "सिथेटिक दूध" – समस्या और समाधान

मधुकर श्याम शुक्ला, (Ph.D.), विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग,
एस० एस० (पी.जी.), कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत
राम शंकर पाण्डेय, (Ph.D.), अर्थशास्त्र विभाग
एस० एस० (पी.जी.), कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
मधुकर श्याम शुक्ला, (Ph.D.),
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, एस० एस० (पी.जी.), कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत
राम शंकर पाण्डेय, (Ph.D.), अर्थशास्त्र विभाग
एस० एस० (पी.जी.), कॉलेज,
शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/12/2020
Revised on : -----
Accepted on : 05/01/2021
Plagiarism : 01% on 29/12/2020

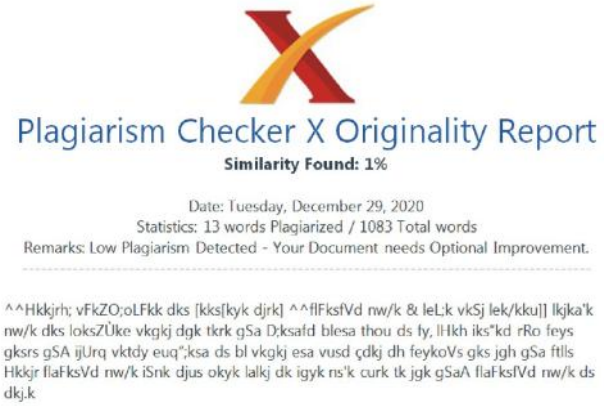
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Tuesday, December 29, 2020
Statistics: 13 words Plagiarized / 1083 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

^^Hkkjrh; vFkZO;oLFkk dks [kks[kyk djrk] ^^flFksfVd nw/k & leL;k vkSj lek/kku]] lkjka'k nw/k dks loksZÙke vkgkj dgk tkrk gSa D;ksafd blesa thou ds fy, lHkh iks"kd rRo feys gksrs gSA ijUrq vktdy euq";ksa ds bl vkgkj esa vusd çdkj dh feykoVs gks jgh gSa ftls Hkkjr flaFksVd nw/k iSnk djus okyk lalkj dk igyk ns'k curk tk jgk gSaA flaFksfVd nw/k ds dkj.k

शोध सार

दूध को सर्वोत्तम आहार कहा जाता हैं, क्योंकि इसमें जीवन के लिए सभी पोषक तत्व मिले होते है। परन्तु आजकल मनुष्यों के इस आहार में अनेक प्रकार की मिलावटे हो रही हैं, जिससे भारत सिंथेटक दूध पैदा करने वाला संसार का पहला देश बनता जा रहा हैं। सिंथेटिक दूध के कारण मनुष्यों को स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारियों का सामना करना पड़ रहा हैं। सरकार इसके लिए अनेक प्रकार के कानून बना रही है, अब देखना यह है कि सरकार लोगों के स्वास्थ्य को सुरक्षित कैसे रखेगी।

मुख्य शब्द

सर्वोत्तम, पोषक, सिंथेटिक दूध, बीमारी, कानून।

प्रस्तावना

भारत का विश्व में दूध उत्पादन में प्रथम स्थान है जिससे लाखों लोगों को रोजगार मिल रहा है। वर्तमान में यह दूध शहर से गाँवों की ओर भी जाने लगा है। एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग एक करोड़ लीटर सिंथेटिक दूध का उत्पादन व विक्रय देश के अनेक राज्यों में हो रहा हैं। अहमदाबाद स्थित उपभोक्ता शिक्षण एवं अनुसंधान सोसाइटी के अध्ययन में दूध के 28 लोकप्रिय ब्राण्डों में विभिन्न बैक्टीरिया पाये जाते है, जिससे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अनेक डेयरी संघो द्वारा कराये गये शोधों से स्पष्ट है, कि दूध में घातक रसायनों की मिलावट हो रही है, यहां तक सरकारी डेरियों में भी मिलावट के मामले सामने आये हैं।

मनुष्य को स्वस्थ्य रहने के लिए प्रतिदिन कम से कम 280 ग्राम दूध एवं दूध से बने पदार्थों का सेवन करना चाहिए। देश में स्वतंत्रता के बाद अनेक चरणों में

दूध के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई हैं जो निम्न हैं–

क्रमांक	उत्पादन (दस लाख टन)	प्रतिव्यक्ति उपलब्धता (ग्राम/प्रति)
1.	1991–1992	178
2.	2000–2001	220
3.	2001–2002	225
4.	2002–2003	230
5.	2003–2004	231
6.	2007–2008	246
7.	2010–2011	255

(स्त्रोतः– कैपिटल मार्केट डेयरी उद्योग विशेषांक)

उपरोक्त आंकड़ो से स्पष्ट है कि दूध उत्पादन के क्षेत्र में अभूतपर्व वृद्धि हुई हैं। आत्मनिर्भर होने के बावजूद भी मिलावटी दूध डेयरी उद्योग के समक्ष एक गम्भीर समस्या बनकर उभरा है, जिससे उपभोक्ता का विश्वास डेयरी उद्योग से उठ रहा है। डेयरी उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिससे करोड़ो ग्रामीण दुग्ध उत्पादक किसान एव उपभोक्ता जुड़े हुए हैं।

सकल घरेलू उत्पाद (जी०डी०पी०) में डेयरी उद्योग का योगदान

वर्ष	जी०डी०पी० में योगदान
1981–1982	4.8
2002–2003	6.5
2006–2007	5.3

(स्त्रोत : वार्षिक रिपोर्ट, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, कृषि भवन नई दिल्ली)

अध्ययन का उद्देश्य

मिलावटी उद्योग के नाम से प्रसिद्ध दूध क्षेत्र में समस्या ही समस्या हैं। इसके अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. डेयरी उद्योगों को वित्त उपलब्ध कराना।
2. सरकार के द्वारा बनाये जा रहे कानूनों से आम उपभोक्ताओं को क्या फायदा हो रहा हैं।
3. मिलावटी दूध/कृत्रिम दूध से आमजनों के स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ रहा हैं।
4. देश की अर्थव्यवस्था में दुध के उत्पादन एवं वितरण से क्या प्रभाव पड़ रहा हैं।
5. सिंथेटिक दूध की समस्या को कैसे दूर की जायें।

सामाजिक लाभ एवं हानि

ग्रामीण किसानों का दूध उत्पादन प्रमुख व्यवसाय है जिससे उनको सामाजिक आर्थिक उन्नति में मदद मिलती है, परन्तु मिलावटी दूध के कारण उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है तथा इन्हे अनेक प्रकार की बीमारियों के कारण मौत का सामना कर रहे हैं।

आर्थिक कारण

दूध उत्पादन में विश्व में भारत का प्रथम स्थान हैं। ग्रामीण वर्ग के युवकों को रोजगार मिलता हैं। दूग्ध उत्पादन में बढोत्तरी करके आर्थिक उन्नति कर सकता हैं।

सिंथेटिक दूध की परिभाषा

अलग मशीन के द्वारा गाय एवं भैस के दूध मे से क्रीम अथवा चिकनाई या वसा निकल लेने के बाद उसको पुनः क्रीमयुक्त एवं झागदार बनाने के लिए उसमें यूरिया, डिटरजेट, कास्टिक सोडा, स्टार्च ऑयल, ग्लूकोज, शैम्पू सफेद पेंट, हाइड्रोजन पराक्साइड जैसे खतरनाक रसायन पदार्थ मिलाये जाते है, जो स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

इसके अलावा स्किम मिल्क पाउडर मे भी उपरोक्त वस्तुएं मिलाकर सिंथेटिक दूध का निर्माण किया जा रहा हैं। दूध की मात्रा को बढाने के लिए चाक व खड़िया का भी प्रयोग किया जाता हैं।

सिंथेटिक दूध को रोकने के कानून

सरकार के द्वारा समय–समय पर अनेक कानूनी प्रावधान के जरिये लोगों को इस जहर से बचाया जाता है। प्रदेश स्तर, जिला स्तर तथा मण्डल स्तर, पर सक्षम अधिकारियों के द्वारा समय–समय पर दूध के सैम्पल लिये जाते है, मिलावट पाये जाने पर उन पर कई प्रकार की कानूनी कार्यवाही की जाती है, जैसेः

1. दूध बेचने वालो को जुर्माने के साथ सजा का प्रावधान।
2. कई राज्यों में रासुका की कार्यवाही।

सिंथेटिक दूध से हानियाँ

चिकित्सकों के अनुसार सिंथेटिक दूध या दुग्ध पदार्थों के सेवन से मानव शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिसके कारण आंखों में सूजन, यकृत तथा गुर्दे प्रभावित हो जाते है। गर्भवती महिलाओं को, हृदयरोगी, उच्च तथा निम्नदाब रोगियों के लिए यह बहुत खतरनाक हैं। बच्चों के लिए यह दूध अत्यन्त हानिकारक है जिससे उनको बाल्यावस्था में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं।

सिंथेटिक दूध से बचाव हेतु सुझाव

स्वस्थ्य समाज और देश के विकास में, वहां के निवासियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और उनका जागरूक तथा कर्त्तव्यनिष्ठ होना आवश्यक है। दूध से होने वाली हानियों के बचाव के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं:

1. देश में प्रचार–प्रसार के माध्यम से सिंथेटिक दूध की जाँच हेतु प्रशिक्षण दिया जाए।
2. रेडियों, टेलीविजन, समाचार पत्रों, होर्डिग एवं उपभोक्ता जागृति शिविर के माध्यम से लोगों को जाँच की सरल विधि की जानकारी हो जानी चाहिए।
3. गांवों, शहरों, महानगरों में खुले दूध की बिक्री पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।
4. शासन के डेयरी विकास विभाग और खाद्य एवं आपूर्ति विभाग द्वारा पैकटों की नियमित जाँच एव दूध का सैम्पल लेना चाहिए।
5. ग्राम, तहसील एवं जिला स्तर पर सिन्थेटिक दूध की रोकथाम हेतु स्थानीय प्रशासनिक अधिकारी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की जानी चाहिए, जो दूध, विक्रेताओं, निजी डेयरी एवं शासकीय डेरियों पर पूर्ण नियन्त्रण रखे तथा समय–समय पर दुग्ध नमूनों की जाँच करती रहे।
6. शासन द्वारा बनाया गया खाद्य अपमिश्रण रोकथाम अधिनियम, सिन्थेटिक दूध के निर्माण को रोकने में सफल नहीं हो सका है। अतः देशहित में स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने वालों के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

ऊपर दिये गये विवरण, दूध क्षेत्र में की जा रही अनवरत् प्रगति, दूध में मिलावटों को रोकने हेतु निरन्तर चलने वाले अनुसंन्धान एवं विकास कार्यक्रमों, दुग्ध संगठनों के सकारात्मक प्रयासों और दुग्ध परियोजनाओं में सफल

क्रियान्वयन के आधार पर कह सकते है कि सिंथेटिक दूध को रोकने में सफलता मिली हैं। सिंथेटिक दूध एक मीठा जहर है जिससे तत्काल मृत्यु नही होती लेकिन यह शरीर को खोखला बना देता है। श्वेत क्रान्ति के कारण नयी मशीने का दुरूपयोग, उत्पादक, मुनाफाखोर एवं निजी डेयरियॉ मांग एवं आपूर्ति के लिए कर रही हैं। अतः प्रदेश की सरकार से मांग है कि कमी वाले क्षेत्रों में सिंथेटिक दूध के निर्माण एवं प्रयोग पर पूर्णतः नियंत्रण किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. रूद्र एवं दत्त, *भारतीय अर्थव्यवस्था*।
2. श्रीवास्तव, रमाशंकर, *कुटीर एवं लघु उद्योग*।
3. सिन्हा, वी०सी०, *भारतीय आर्थिक समस्याएं*।
4. मेमोरिया एवं जैन, *भारतीय अर्थव्यवस्था*।
5. सहकारिता पत्रिका – जन सूचना सम्पर्क विभाग।
6. महिला डेयरी विकास परियोजना – वार्षिक रिपोर्ट 2008।
7. पशुपालन एवं डेयरी विभाग कृषि भवन नयी दिल्ली – वार्षिक रिपोर्ट।
8. कैपिटल मार्केट डेयरी उद्योग विशेषांक।
9. योजना मासिक पत्रिका।
10. कुरूक्षेत्र मासिका पत्रिका नवंम्बर 2008।
11. दैनिक समाचार पत्र – अमर उजाला बरेली मण्डल।
12. जिला विकास पुस्तिका जनपद, शाहजहाँपुर।
13. चौपाल पत्रिका – अमर उजाला।
14. www.bhartiyoshodh.com; Volume 7 Issue 9- year 2016.

****